

दानियेल की पुस्तक - संख्या इक्यावन

पालमोनी: दानियेल और प्रकाशित वाक्य में समय और भाषा के स्वामी का अनावरण

Jeff Pippenger

2024-01-15

दानियेल अध्याय आठ, पद तेरह और चौदह में जिसका वर्णन "वह विशेष पवित्र जो बोल रहा था" के रूप में हुआ है, वह पालमोनी के रूप में मसीह ही है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मसीह की पहचान अल्फा और ओमेगा के रूप में की गई है, जो अन्य अद्भुत सत्तों के साथ-साथ मसीह को अद्भुत भाषाविद् भी दर्शाता है; और दानियेल तथा प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें मिलकर मसीह को समय और भाषा के स्वामी के रूप में प्रस्तुत करती हैं। यह मानवीय क्षमता से परे है समझना कि इसका महत्व और गहराई क्या है कि पालमोनी (भेदों का गणनाकर्ता) के रूप में मसीह अपने चरित्र के उस गुण का परिचय उन्हीं दो पदों में देता है जो एडवेंटवाद का केंद्रीय स्तंभ स्थापित करते हैं, परन्तु जिन भेदों को भेदों का गणनाकर्ता प्रकट करना चुनता है, उन्हें पहचानना और उनकी रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है।

गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहीवा ही की हैं; परन्तु जो बातें प्रकट की गई हैं, वे सदा के लिए हमारी और हमारे पुत्रों की हैं, ताकि हम इस व्यवस्था की सब बातों पर चलें। व्यवस्थाविवरण 29:29।

एक प्रकट किया गया रहस्य यह है कि गुप्त बातों का गणक (पल्मोनी) वही "वह निश्चित संत जिसने कहा" है; और जिन दो पदों में वह स्वयं को प्रकट करता है, उनमें एडवेंटवाद का केंद्रीय स्तंभ पहचाना जाता है। उन्हीं दो पदों में अद्भुत गणक उस "ज्ञान की वृद्धि" की पहचान करता है, जिसकी मुहर उसने, यहूदा के गोत्र के सिंह के रूप में, 1798 में खोल दी। उन्हीं दो पदों में "ज्ञान की वृद्धि" का प्रतिनिधित्व करने वाले मिलर के स्वप्न के रत्न, पल्मोनी के हाथ के निर्देशन से, हबककूक के दो पदों पर प्रकाशित किए गए।

तब मैं ने एक पवित्र जन को बोलते हुए सुना; और उस पवित्र जन ने जो बोल रहा था, एक अन्य पवित्र जन से कहा, नित्य बलिदान और उजाड़ देने वाले अपराध के विषय की यह दर्शन-कथा कब तक रहेगी, कि पवित्रस्थान और सेना दोनों पैरों तले रौंदे जाएँ? और उस ने मुझ से कहा, दो हज़ार तीन सौ दिनों तक; तब पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा। दानियेल 8:13, 14

जब दानियेल ने बाइबल की भविष्यवाणी के राज्यों का भविष्यसूचक दर्शन प्राप्त किया, और फिर पद 13 और 14 में स्वर्गीय संवाद सुना, तब उसने उस "दर्शन" को समझने का प्रयास किया।

और ऐसा हुआ कि जब मैं, अर्थात् मैं दानियेल, दर्शन देख चुका था और उसके अर्थ की खोज कर रहा था, तब देखो, मेरे सामने मनुष्य के समान रूप का एक व्यक्ति खड़ा था। और मैंने ऊलाई के तटों के बीच से एक मनुष्य की आवाज़ सुनी, जो पुकारकर कह रही थी, "गब्रिएल, इस मनुष्य को यह दर्शन समझा दे।" दानियेल 8:15, 16.

वह "दर्शन" जिसे Daniel समझने का प्रयास कर रहा है, "chazon" वाला दर्शन है; पर "mareh" वाला दर्शन वही है जिसे Daniel को समझाने के लिए Gabriel को कहा गया है। प्रत्येक तथ्य का अपना महत्व है, और यदि यह तथ्य छूट जाए, तो इस खंड की संरचना और रूपरेखा मूलतः नष्ट हो जाती है। पंद्रहवें पद में, जब Daniel "chazon" वाले दर्शन को समझने की कोशिश करता है, तब "mareh" छिपा रहता है, पर फिर भी निरूपित होता है, क्योंकि "appearance of a man" (Gabriel) में हिब्रू शब्द "mareh" का अनुवाद "appearance" किया गया है। पद पंद्रह में वे दोनों शब्द उपस्थित हैं जिनका अनुवाद "दर्शन" किया गया है। Daniel पद पंद्रह में "chazon" को समझना चाहता है, पर Palmoni पद सोलह में Gabriel को आदेश देता है कि वह Daniel को "mareh" समझाए। इन दोनों पदों की रूपरेखा उद्देश्यपूर्ण है, और इन दोनों शब्दों के संबंध और भेद को रेखांकित करती है।

दानिय्येल को "मारेह" समझाने का आदेश गैब्रिएल को पल्मोनी देता है, क्योंकि जो गैब्रिएल को आदेश देता है वही है जो जल के ऊपर खड़ा है, और गैब्रिएल ने उसकी आवाज सुनी, "उलाई के किनारों के बीच एक मनुष्य की आवाज"। किनारों के बीच बहने वाली नदी उलाई ही है, और शास्त्रों में जल के ऊपर खड़ा होने वाला मसीह है। इस तथ्य के साथ यह तथ्य भी जुड़ा है कि मसीह, महादूत के रूप में, वही है जो स्वर्गदूतों को आदेश देता है। किनारों के बीच की वह आवाज, पद तेरह में "वह विशिष्ट पवित्रजन" की आवाज है, और उसी का वचन गैब्रिएल को आदेश देता है कि वह दानिय्येल को "मारेह" दर्शन समझाए। दानिय्येल के अध्याय बारह में, मसीह फिर से नदी के किनारों के बीच है। अध्याय बारह में वह सन के वस्त्र पहने हुए है, और वह उस की शपथ खाता है जो सदा जीवित है।

परन्तु तू, हे दानिय्येल, इन वचनों को बन्द कर, और पुस्तक पर मुहर लगा दे, अन्त के समय तक; बहुत लोग इधर-उधर दौड़ेंगे, और ज्ञान बढ़ेगा। तब मैं, दानिय्येल, ने देखा, और देखो, वहाँ दो और खड़े थे, एक नदी के इस तट पर, और दूसरा नदी के उस तट पर। और उनमें से एक ने उस सन के वस्त्र पहने हुए मनुष्य से, जो नदी के जल के ऊपर था, कहा, इन अद्भुत बातों का अन्त कब तक होगा? तब मैंने उस सन के वस्त्र पहने हुए मनुष्य को, जो नदी के जल के ऊपर था, सुना; उसने अपना दाहिना और बायाँ हाथ आकाश की ओर उठाया, और जो सदा जीवित है उसकी शपथ खाई कि यह एक समय, समयों और आधा समय तक होगा; और जब वह पवित्र लोगों की शक्ति को तितर-बितर करने का काम पूरा करेगा, तब ये सब बातें पूरी हो जाएँगी। दानिय्येल 12:4-7.

वह मनुष्य, जो "सन का वस्त्र पहने हुए था, जो नदी के जल के ऊपर था," "उसने अपना दाहिना और बायाँ हाथ स्वर्ग की ओर उठाया, और उसकी शपथ खाई जो सदा जीवित है," और वही मनुष्य है जिसने अध्याय आठ में गैब्रिएल को आज्ञा दी। प्रकाशितवाक्य के अध्याय दस में, मसीह ने भी अपना हाथ उठाया और उसकी शपथ खाई जो सदा जीवित है, परन्तु वहाँ वह जल और भूमि दोनों पर खड़ा है।

और जिस स्वर्गदूत को मैं ने समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा देखा था, उसने अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया, और उसकी शपथ खाई जो युगानुयुग जीवित रहता है, जिसने स्वर्ग और उसकी सब वस्तुओं को, और पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को, और समुद्र और उसकी सब वस्तुओं को सृजा है, कि अब फिर विलम्ब न होगा। प्रकाशितवाक्य 10:5, 6.

प्रकाशितवाक्य के दसवें अध्याय का शक्तिशाली स्वर्गदूत पाल्मोनी है, जिसने अध्याय आठ में नदी के दोनों तटों के बीच से गैब्रिएल से बात की, और अध्याय बारह में यह बताया कि "आश्चर्यों" का "अंत" कब होगा। प्रकाशितवाक्य के दसवें अध्याय में, वही वह है जिसने "सिंह" की तरह गर्जना की, क्योंकि वहाँ उसे यहूदा के गोत्र के सिंह के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

और प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, रोओ मत; देखो, यहूदा के गोत्र का सिंह, दाऊद की जड़, ने पुस्तक खोलने और उसकी सात मुहरें तोड़ने में विजय पाई है। और मैंने देखा, और देखो, सिंहासन के मध्य में और चार प्राणियों के बीच में, और प्राचीनों के बीच में, एक मेम्ना खड़ा था, मानो वह वध किया गया हो; उसके सात सींग और सात आंखें थीं, जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं, जिन्हें सारी पृथ्वी में भेजा गया है। और वह आया और उस के दाहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली। प्रकाशितवाक्य 5:5-7.

यहूदा के गोत्र के सिंह के रूप में, मसीह वह मेमना है जो सात मुहरों से मुहरबंद उस पुस्तक को खोलने के लिए विजयी ठहरा। चाहे वह दानिय्येल की पुस्तक में जल के ऊपर चलते हुए दिखाई देता हो, या प्रकाशितवाक्य में एक पाँव समुद्र पर और दूसरा पृथ्वी पर रखे हुए हो, इनमें से प्रत्येक भविष्यद्वाणीय चित्रण भविष्यद्वाणीय समय से संबंधित है। और यहूदा के गोत्र का सिंह होकर, मसीह अपने वचन को मुहरबंद भी करता है और उसे खोलता भी है। जैसे उसने दानिय्येल की पुस्तक को मुहरबंद किया, वैसे ही उसने प्रकाशितवाक्य अध्याय दस में सात गर्जनों को भी मुहरबंद किया।

यूहन्ना को निर्देश देने वाला वह बलवान स्वर्गदूत कोई और नहीं, बल्कि स्वयं यीशु मसीह थे। समुद्र पर अपना दाहिना पैर और सूखी भूमि पर अपना बायाँ पैर रखना यह दर्शाता है कि शैतान के साथ महान संघर्ष के समापन

दृश्यों में वह कौन-सी भूमिका निभा रहे हैं। यह स्थिति संपूर्ण पृथ्वी पर उनके सर्वोच्च सामर्थ्य और अधिकार का द्योतक है। यह संघर्ष युग दर युग अधिक प्रबल और अधिक दृढ़ होता गया था, और ऐसा ही होता रहेगा, उन समापन दृश्यों तक जब अंधकार की शक्तियों की कुशल चालें अपनी चरमसीमा पर पहुँच जाएँगी। शैतान, दुष्ट मनुष्यों के साथ मिलकर, समूचे संसार और उन कलीसियाओं को धोखा देगा जो सत्य का प्रेम स्वीकार नहीं करतीं। परन्तु वह बलवान स्वर्गदूत ध्यान की माँग करता है। वह ऊँचे स्वर में पुकारता है। वह अपनी वाणी की सामर्थ्य और अधिकार उन लोगों को दिखाने वाला है जिन्होंने सत्य का विरोध करने के लिए शैतान के साथ हाथ मिला लिया है।

इन सात गर्जनों के अपनी वाणी उच्चारित करने के बाद, लघु पुस्तक के विषय में दानिय्येल की भाँति यूहन्ना को यह आज्ञा मिलती है: 'जो बातें उन सात गर्जनों ने कही हैं, उन्हें मुहरबंद कर दे।' ये भावी घटनाओं से संबंधित हैं, जो अपने क्रम में प्रकट होंगी। दिनों के अंत में दानिय्येल अपने भाग के लिए खड़ा होगा। यूहन्ना लघु पुस्तक को मुहर खुली हुई देखता है। तब संसार को दिए जाने वाले प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्वर्गदूतों के संदेशों में दानिय्येल की भविष्यवाणियों का उचित स्थान होता है। लघु पुस्तक की मुहर का खुलना समय-संबंधी संदेश था।

दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें एक हैं। एक भविष्यवाणी है, दूसरी प्रकटीकरण है; एक मुहरबंद पुस्तक है, दूसरी खुली हुई पुस्तक है। यूहन्ना ने वे भेद सुने जो गर्जनाओं ने उच्चारित किए, परन्तु उसे उन्हें न लिखने की आज्ञा दी गई।

यूहन्ना को दिया गया विशेष प्रकाश, जो सात गर्जनाओं में व्यक्त किया गया था, उन घटनाओं का निरूपण था जो प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के संदेशों के अंतर्गत घटित होने वाली थीं। सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, पृष्ठ 971।

मसीह, जिन्हें पालमोनी के रूप में—अध्याय आठ और बारह में जल के ऊपर दिखाए गए उस मनुष्य के रूप में—प्रस्तुत किया गया है, वही अपने हाथ में छोटी पुस्तक लिए शक्तिशाली स्वर्गदूत भी हैं। वह यहूदा के गोत्र का सिंघ है, जो अपने वचन पर मुहर लगाता और उसे खोलता है, और वही गब्रिएल को आज्ञा देता है, क्योंकि वही प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल है।

फिर भी महादूत मीकाएल ने, जब उसने शैतान के साथ मूसा के शरीर के विषय में विवाद किया, तो उसके विरुद्ध निन्दात्मक दोषारोपण करने का साहस नहीं किया, पर कहा, प्रभु तुझे धिक्कारे। यहूदा 1:9.

मीखाएल मसीह का नाम है, और यह नाम दर्शाता है कि वह केवल स्वर्गदूतों का सेनापति ही नहीं है, बल्कि वही है जिसके पास पुनर्जीवित करने की सामर्थ्य भी है। मीखाएल नाम का अर्थ है "परमेश्वर के समान कौन?" जब नबूकदनेस्सर ने भट्टी में तीन धर्मनिष्ठों के साथ परमेश्वर के पुत्र के समान एक को देखा, तो उसने मीखाएल को देखा। और मुख्य स्वर्गदूत मीखाएल परमेश्वर की प्रजा का वह राजकुमार भी है, जिसके विरोध में मूर्तिपूजक रोम के छोटे सींग ने क्रूस पर अपने आप को बड़ा ठहराया, दानिय्येल अध्याय आठ, पद 11 की पूर्ति में।

परन्तु मैं तुझे वह दिखाऊँगा जो सत्य की पुस्तक में लिखा है; और इन बातों में मेरे साथ ठहरने वाला कोई नहीं, केवल तुम्हारा प्रधान मीकाएल। दानिय्येल 10:21.

माइकल ही वह है जो स्वर्गदूतों को आदेश देता है, मृतकों को पुनर्जीवित करता है और यह तय करता है कि परिवीक्षा कब समाप्त होती है।

'और उसी समय मीकाएल, जो तेरी प्रजा के पुत्रों के लिए खड़ा है, वह महान प्रधान होकर उठ खड़ा होगा; और संकट का ऐसा समय होगा, जो जाति के होने से अब तक नहीं हुआ, यहाँ तक कि उसी समय तक; और उसी समय तेरी प्रजा में से हर एक, जिसका नाम पुस्तक में लिखा हुआ पाया जाएगा, उद्धार पाएगा।' जब यह संकट का समय आएगा, तब हर एक मामले का निर्णय हो चुका होगा; अब न कोई अनुग्रहकाल रहेगा, न ही पश्चाताप न करनेवालों के लिए दया। जीवित परमेश्वर की मुहर उसकी प्रजा पर है। यह छोटा सा अवशेष, जो अजगर की

सेनाओं द्वारा संगठित पृथ्वी की शक्तियों के साथ होने वाले घातक संघर्ष में अपने को बचाने में असमर्थ है, परमेश्वर को ही अपनी रक्षा बना लेते हैं। सर्वोच्च सांसारिक सत्ता द्वारा यह फ़रमान पारित हो चुका है कि वे पशु की आराधना करें और उत्पीड़न और मृत्यु के दंड के अधीन उसका चिन्ह ग्रहण करें। अब परमेश्वर अपनी प्रजा की सहायता करे, क्योंकि फिर उसके सहारे के बिना ऐसे भयानक संघर्ष में वे क्या कर सकेंगे! टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 212.

अंतिम रहस्य, जिसे यहूदा के गोत्र का सिंह खोलता है, यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य है, और इसमें यह भी शामिल है कि उसके भविष्यसूचक वचन के प्रत्येक तत्व की परिकल्पना और संरचना पर उसी का नियंत्रण है। सन के वस्त्र पहने हुए वह पुरुष, जो जल पर खड़ा है, जो अपना हाथ उठाता है और उस की शपथ खाता है जो युगानुयुग जीवित है, और जो सिंह के समान पुकारता है जिससे सात गर्जन अपनी वाणी उच्चारित करती हैं—वही दानिय्येल की पुस्तक को मुहरबंद करता है और प्रकाशितवाक्य की सात गर्जनों को भी मुहरबंद करता है। वही सात मुहरों से मुहरबंद पुस्तक की मुहरें खोलता है, वही पुनरुत्थान करने की शक्ति रखता है, और वही महान प्रधान है जो उठ खड़ा होता है और अनुग्रहकाल की समाप्ति की घोषणा करता है। जब पल्मोनी ने गब्रिएल को यह आज्ञा दी कि वह दानिय्येल को "मारेह" दर्शन समझा दे, तो उसका अभिप्राय ठीक यही था।

उसने Gabriel को "chazon" दर्शन Daniel को समझाने का आदेश नहीं दिया। "chazon" दर्शन, Daniel अध्याय आठ के पद 1 से 12 में बाइबल की भविष्यवाणी के राजाओं का दर्शन है, और यही "दर्शन" पद 13 में अवधि से संबंधित प्रश्न में भी संदर्भित है। "यह दर्शन कब तक रहेगा?" "chazon" दर्शन उन दैनिक (paganism) और अधर्म (papalism) की उजाड़ करने वाली शक्तियों से संबंधित है जो पवित्रस्थान और सेना को रौंद डालती हैं।

तब मैंने एक पवित्र जन को बोलते सुना, और दूसरे पवित्र जन ने उस विशेष पवित्र जन से, जो बोल रहा था, कहा, "दैनिक बलिदान, और उजाड़ने वाले अपराध, जिसके कारण पवित्रस्थान और सेना दोनों पैरों तले रौंदे जाते हैं, के विषय में यह दर्शन कब तक रहेगा?" दानिय्येल 8:13।

मसीह, पलोंनी (अद्भुत गणक) के रूप में, से पूछा जाता है कि "कब तक" "chazon" दर्शन ठहरेगा, और वह उत्तर देता है, "दो हजार तीन सौ दिनों तक; तब पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा।" दानिय्येल तब उस "chazon" दर्शन को समझना चाहता है जो "नित्य बलिदान, और उजाड़ का अपराध, ताकि पवित्रस्थान और सेना दोनों को पांव तले रौंदे जाने के लिए दे दिया जाए" से संबंधित है। परन्तु गब्रिएल को यह आज्ञा दी जाती है कि वह दानिय्येल को "mareh" दर्शन समझाए। परमेश्वर के वचन में प्रत्येक तथ्य का अपना महत्व है। "mareh" दर्शन, संध्या और प्रातः के उस दर्शन का नाम है जिसका उल्लेख छब्बीसवीं आयत में है।

और जो सांझ और भोर का दर्शन बताया गया है, वह सत्य है; इसलिए उस दर्शन को बंद कर दे, क्योंकि यह बहुत दिनों के लिए है। दानिय्येल 8:26

उस पद में 'दर्शन' शब्द दो बार आया है। पहला उल्लेख 'mareh' दर्शन का है और दूसरा 'chazon' दर्शन का। 'mareh' दर्शन 'शामें और सुबहें' का दर्शन है। 'शामें और सुबहें' का इब्रानी प्रयोग बाइबल में अक्सर मिलता है, और इसे हमेशा 'शामें और सुबहें' ही अनुवादित किया जाता है, जैसा कि छब्बीसवें पद में है। बाइबल में केवल एक ही स्थान पर इसे 'शामें और सुबहें' से भिन्न रूप में अनुवादित किया गया है, और वह चौदहवाँ पद है, जहाँ इसका अनुवाद केवल 'दिन' किया गया है। चौदहवें पद का वास्तविक इब्रानी पाठ इस प्रकार होगा: 'तेईस सौ शामें और सुबहें तक।'

वह पद, जो एडवेंटिज़्म का केन्द्रीय स्तंभ है, परमेश्वर के वचन में एकमात्र ऐसा पद है जहाँ "संध्या और प्रभात" को सीधे "दिन" कहा गया है। प्रत्येक तथ्य का अपना महत्व होता है, और यदि और कुछ नहीं, तो यह स्पष्ट है कि पालमोनी ने जान-बूझकर उस पद पर जोर दिया था। उन्होंने किंग जेम्स बाइबल के अनुवादकों के मनो को इस प्रकार निर्देशित किया कि वे उस वाक्यांश को उसके वचन में जैसा सदैव लिखा जाता है, उससे भिन्न ढंग से लिखें। इस तथ्य

से जो निष्कर्ष निकाला जाना है, वह यह है कि जब गैब्रियल से दानिय्येल को "mareh" दर्शन समझाने को कहा जाता है, तो उससे दानिय्येल को 1844 के प्रकट होने का दर्शन समझाने के लिए कहा जा रहा होता है, न कि पवित्रस्थान और सेना को रौंदे जाने से संबंधित "chazon" दर्शन।

"संध्या और प्रातः" का दर्शन उस प्रकट होने के बारे में है, जो 22 अक्टूबर, 1844 को पवित्रस्थान की शुद्धि आरंभ होने पर हुआ। 22 अक्टूबर, 1844 को हुए उस प्रकट होने का दर्शन पवित्रस्थान को रौंदे जाने के बारे में नहीं, बल्कि पवित्रस्थान की शुद्धि के बारे में है। क्या उस तिथि को कोई भविष्यसूचक प्रकट होना हुआ था?

“हमारे महायाजक के रूप में पवित्रस्थान के शुद्धीकरण के लिए मसीह का परमपवित्र स्थान में आना, जैसा कि दानिय्येल 8:14 में दृष्टिगोचर कराया गया है; मनुष्य के पुत्र का पुरातनकालीन के पास आना, जैसा कि दानिय्येल 7:13 में प्रस्तुत किया गया है; और प्रभु का अपने मन्दिर में आना, जिसकी भविष्यद्वाणी मलाकी ने की थी—ये सब एक ही घटना के वर्णन हैं; और यही बात उस दूल्हे के विवाह में आने के द्वारा भी निरूपित की गई है, जिसका वर्णन मसीह ने मत्ती 25 में दस कुँवारियों के दृष्टान्त में किया है।” The Great Controversy, 426.

गैब्रियल को यह निर्देश दिया गया था कि वह दानिएल को 22 अक्टूबर, 1844 को मसीह के अपने मंदिर में होने वाले भविष्यवाणी के अनुसार प्रकट होने को समझाए। इसी कारण, गैब्रियल ने दानिएल को 22 अक्टूबर, 1844 की तिथि के लिए एक दूसरा गवाह प्रदान किया, क्योंकि गैब्रियल ने हर उस बाइबल लेखक का मार्गदर्शन किया जिसने किसी न किसी रूप में उस बाइबलीय सिद्धांत को लिखा था, जो बताता है कि सत्य दो गवाहों की गवाही पर स्थापित होता है। यदि गैब्रियल को दानिएल को 22 अक्टूबर, 1844 समझाना था, तो 'प्रकट होने का दर्शन' स्थापित करने के लिए उसे एक दूसरे गवाह की आवश्यकता होती।

गैब्रियल अपना कार्य सबसे पहले डैनियल की 'chazon' दर्शन को समझने की इच्छा को संबोधित करके शुरू करता है, और वह ऐसा यह पहचान कर करता है कि 'chazon' दर्शन वही दर्शन है जो 1798 में 'time of the end' पर समाप्त होता है।

और मैंने उलाई के किनारों के बीच से एक मनुष्य की आवाज़ सुनी, जिसने पुकारकर कहा, “गब्रिएल, इस मनुष्य को यह दर्शन समझा दे।” तब वह जहाँ मैं खड़ा था, उसके निकट आया; और जब वह आया, तो मैं डर गया और मुख के बल गिर पड़ा; पर उसने मुझ से कहा, “हे मनुष्य के पुत्र, समझ ले, क्योंकि यह दर्शन अंत के समय के लिये है।” दानिय्येल 8:16, 17.

पिछले पद में जो "दर्शन" है, अर्थात् "अंत के समय" का, वह "chazon" दर्शन है, और दानिय्येल की पुस्तक में "अंत का समय" 1798 है। यही वह "दर्शन" है जिसे दानिय्येल समझना चाहता था, पर यह वह "दर्शन" नहीं था जिसे दानिय्येल को समझाने के लिए गब्रिएल को कहा गया था। उसके लिए गब्रिएल दूसरी गवाही देने वाला है।

वह वहाँ आ पहुँचा जहाँ मैं खड़ा था; और जब वह आया, तो मैं डर गया और मुँह के बल गिर पड़ा। पर उसने मुझसे कहा, हे मनुष्य के पुत्र, समझ, क्योंकि यह दर्शन अन्त समय के लिए है। जब वह मुझसे बातें कर रहा था, तब मैं भूमि की ओर मुँह किए गहरी नींद में पड़ गया; परन्तु उसने मुझे छूकर सीधा खड़ा कर दिया। फिर उसने कहा, देख, मैं तुझे बता दूँगा कि क्रोध के अन्त के समय क्या होगा; क्योंकि नियत समय पर अन्त होगा। दानियेल 8:17-19.

गैब्रिएल अपना दायित्व इस प्रकार आरंभ करते हैं कि वे दानिय्येल से "देखो" कहते हैं, अर्थात् वे उसे अगले तथ्य पर ध्यान देने के लिए कहते हैं। अगला तथ्य यह है कि लैव्यव्यवस्था 26 के दो "सात समय" में से जो "अंतिम कोप" है, वह 1844 में समाप्त होता है। यह "अंतिम कोप" सीधे तौर पर एक समय-भविष्यवाणी के रूप में पहचाना जाता है, क्योंकि उसके "समाप्त" होने के लिए एक "नियत समय" ठहराया गया है। "कोप" अवश्य ही एक समयावधि का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि उसके अंत के लिए एक "नियत समय" है। यदि "कोप" मात्र समय का एक बिंदु होता तो उसका कोई अंत न होता; वह केवल वह क्षण होता जब वह घटित हुआ।

"क्रोध" का एक निर्धारित अंत-बिंदु था, इसलिए वह एक समयावधि के अंत का प्रतिनिधित्व करता है। उस समयावधि को "अंतिम क्रोध" के रूप में दर्शाया गया है। यदि कोई अंतिम है, तो एक प्रथम भी होना चाहिए। "प्रथम क्रोध" की पहचान दानियेल के ग्यारहवें अध्याय में की गई है, और वहाँ भी वह एक समयावधि ही है, क्योंकि पोपत्र "क्रोध" के अंत तक "कार्य करता और समृद्ध होता" रहने वाला था।

और समझदारों में से कुछ गिरेंगे, ताकि उन्हें परखा जाए, शुद्ध किया जाए और उजला किया जाए, अंत के समय तक; क्योंकि वह अभी भी एक ठहराए हुए समय के लिए है। और राजा अपनी इच्छा के अनुसार करेगा; और वह अपने को ऊँचा करेगा, और हर देवता से ऊपर अपने को बड़ा ठहराएगा, और देवताओं के परमेश्वर के विरुद्ध अद्भुत बातें कहेगा, और तब तक सफल रहेगा जब तक रोष पूरा न हो जाए; क्योंकि जो ठहराया गया है वही किया जाएगा। दानियेल 11:35, 36.

इन दो पदों में विषय वह राजा है जो अपनी इच्छा के अनुसार करता है और स्वयं को ऊँचा उठाता है। पद छत्तीस वही पद है जिसका भावार्थ पौलुस देता है, जब वह 'पाप का मनुष्य' की पहचान करता है, जो परमेश्वर के मंदिर में बैठा है और स्वयं को परमेश्वर ठहराता है। अंधकार युग का उत्पीड़न वर्ष 538 से 1798 तक पद पैंतीस में पहचाना गया है, और वह 'अंत के समय' तक जारी रहता है, जो 1798 था, जो 'नियत समय' था। तब पद छत्तीस यह बताता है कि पोपत्र 'फलता-फूलता' रहेगा 'जब तक रोष पूरा न हो जाए।' यह पद बताता है कि पोपत्र 1798 तक फलता-फूलता रहा; उसी समय पहला 'रोष' 'पूरा हो गया' था। परमेश्वर के भविष्योक्त वचन ने यह 'ठहराया' था कि पोपत्र बारह सौ साठ वर्षों तक, 1798 तक, बना रहेगा, जो 'अंत का समय' था।

पहली "indignation" 1798 में समाप्त हुई, और "the last indignation" 1844 में समाप्त हुई। दोनों "indignation" को समय अवधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिनका विशिष्ट समापन था; इस प्रकार दोनों की पहचान समय संबंधी भविष्यवाणियों के रूप में होती है। पालमोनी ने गैब्रियल को आदेश दिया कि वह दानियेल को "संध्याओं और प्रातःकालों" (दिन) का "रूप का दर्शन" ("mareh") समझाए, जिसने 22 अक्टूबर, 1844 की पहचान की; और उसने यह उस तिथि के लिए दूसरी गवाही देकर किया।

तेरहवीं आयत का "chazon" दर्शन, जिसे दानियेल समझना चाहता था, पैरों तले रौंदे जाने का वह दर्शन था, जिसका समापन 1798 में "अन्त के समय" पर हुआ। चौदहवीं आयत का "mareh" दर्शन का समापन 22 अक्टूबर, 1844 को परमपवित्र स्थान में मसीह के प्रकट होने के साथ हुआ, जो दो हजार तीन सौ वर्षों की समय-भविष्यवाणी की पूर्ति थी, और साथ ही दो हजार पाँच सौ बीस वर्षों की समय-भविष्यवाणी की भी पूर्ति थी। इन दोनों समय-भविष्यवाणियों का निरूपण हबक्कूक की पवित्र तालिकाओं पर किया गया है, जिन्हें बहन व्हाइट प्रभु के हाथ से निर्देशित बताती हैं, और जिनमें कोई परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

"हमें बहुत-से पाठ सीखने हैं, और बहुत-से, बहुत-से पाठ त्यागने भी हैं। केवल परमेश्वर और स्वर्ग ही अभांत हैं। जो यह सोचते हैं कि उन्हें कभी किसी प्रिय मत को छोड़ना नहीं पड़ेगा, कभी अपना मत बदलने का अवसर नहीं आएगा, वे निराश होंगे। जब तक हम अपने विचारों और मतों पर दृढ़ता से अड़े रहते हैं, तब तक हम वह एकता नहीं पा सकते जिसके लिए मसीह ने प्रार्थना की थी।" Review and Herald, July 26, 1892.